

“कुरबानी क्या है ?”

- शेख रज़ाउल्लाह अ.करीम मदनी

कुरबानी किसी भी कौम के लिये खिंदगी की दलील है, कौम जब तक कुरबानी का जखबा रभती है उइख व बुलंदीया उस के कदम युभती है और कुरबानी का जखबा कम होने के साथ ही कौम अपनी कदर भोने लगती है.

एद कुरबां दर हकीकत कौम का हर पकत व हरआन अपना सभ कुछ राहे भुटा में लुटाने के जखभे से सरशार रहने की भुशी का धखहार है और अेक जानपर की कुरबानी देने के अमल को हर साल दोहराना धस भात का अेलान है कि हम धसी तरह अपने माल व मताअ और भ्वाहिश व आरखु की कुरबानी के लिये भी तेयार है.

एद कुरबां का भकसद सिई अेक जानपर को खभह कर देना हरगिख नहीं अगर हम यह सभजते है तो यह कुरबानी का कभखोर और सतही तसप्पुर है उसकी धभखत धस्लाम जैसा भुकभल दीन और हकीकत पसंद भखहब हरगिख नहीं देता.

कुरबानी को नबी (स.अ.प.) ने “सुणनत अनीकुम धभराहीम” से तअनीर किया है और जब धभ्राहीम भलीलुल्लाह अलयहिस्सलाम की खिंदगी देभते है तो सरापा कुरबानी व धभार नखर आती है. कौन सी अैसी खीख है उसकी कुरबानी धभ्राहीम अलयहिस्सलामने न दी हो. माल व दौलत की कुरबानी, नह व भन्सभ की कुरबानी, भां-भाप की कुरबानी, बीवी बरखो की कुरबानी गरख कि धभ्राहीम अलयहिस्लाम की सारी खिंदगी ही कुरबानी से धभारत है. अगर हमारे अंदर यह सारे जखभात पैटा हो सके तो सभजना याहिअे कि हमने पाकखी कुरबानी की और अगर भुटा न भ्वास्ता हमने कध जानपर खभह कर डाले और दिल् में वह जखभात पैटा न हो सके नीख अपनी ओर अपने माल व मताअ और भ्वाहिशत की कुरबानी का धरादह तक दिल् में न हुपा तो ना तो हमने कुरबानी को सभज और न धस से कोध झायटा हांसिल किया. कुरआनी बयान के भुताभिक के अल्लाह रब्बुल धखखत अगर कबुल करता है तो सिई नेक जखभात और भुलुस को कबुल करता है. परना गोशत-पोशत-हखीयां और भुन तो यहां खमीन पर रह भते है. उस के यहां तो सिई भुलुस व अमले सालेह और नेक जखभात ही पहुंयते है. अल्लाह का इरमान है, “हरगिख नहीं पहुंयता धस कुरबानी का गोशत और भुन लेकिन पहुंयता है उसको तुभहारा तकपा.” (सुरह हख - 39)

कुरबानी और अशरह खीलहख के इखार्धल

अशरह खीलहख के अंदर किअे जानेपाले अअमाल का दरभ भहुत बणा है और यह अशराह भहुत ही इखीलतो का हाभिल है. नबी (स.अ.प.) की अेक हदीष उस को धभाम बुभारी ने रिपायत किया है उस में है कि धस अशराह के अमल को भे भकबुलियत बारगाहे धलाही में है वह किसी अमल को हांसिल नहीं है. सहाबा किराम ने अर्ख किया “क्या राहे भुटा में जेहाद करनेपाले को भी वह इखीलत हांसिल नहीं ?” इरमाया, “हां, उस को भी हांसिल नहीं सिपाय उस भुनहिद के भे राहे भुटा में अपना सभ कुल लूंटा है.” धस पुरे अशरह के रोखो की भी बणी इखीलत है. नबी (स.अ.प.) धस अशरह में रोखे रभ्पा करते थे. सुनन निसार्ध व भुस्नद धभाम अहमद बीन हभल

રહમતુલ્લાહ અલયહ મેં મઝકુર હૈ કિ “આપ(સ.અ.વ.) અશરહ ઝીલહજજ કે રોઝે, હર માહ કે તીન રોઝે ઓર ફઝર સે પહલેકી દો રકઅતે કભી નહિં છોળા કરતે થૈ” ઇસ અશરહ કો ૯ જિલહજજ કે રોઝા કી ખુસુસી ફઝીલત આઈ હૈ. યુનાંચે મુસ્લિમ શરીફ વગૈરહ મેં હૈ કિ યવમે અરફા કા રોઝા ગુઝિસ્તાં સાલ વ આઈન્દહ સાલ કે ગુનાહોં કો ઘો ડાલતા હૈ, “હાં યાદ રહે કી હાજી લોગ યવમે અરફાકા રોઝા ન રખે કયુંકિ ઇસકા રોઝા ઉનકે લીએ મમનુઅ હૈ.” (ઇબ્નેમાજા)

કુરબાની કા અમલ અલ્લાહ તઆલા કો ઇન્તિહાઈ દરજા મહબુબ હૈ. નબી (સ.અ.વ.) ને ફરમાયા “ઇદુઝ ઝોહા કે દિન ખુન બહાને (યઅની કુરબાની કરને) સે ઝયાદહ મહબુબ કોઈ અમલ નહિં. નેક નિયતી સે કી ગઈ કુરબાની ખુન ઝમીન પર ગિરને સે પહેલે હી બારગાહે રબ્બુલ ઇઝઝત મેં મકબુલ હો જતા હૈ.” (તિરમીઝી)

ઇદે કુરબાં કા ચાંદ દેખને કે બાદ કા અમલ

ઇદે કુરબાં કા ચાંદ દેખતે હી તકબીરાતે ઇદૈન પળ્હના શુરૂઅ કર દેની ચાહીએ. તકબીરાત બુલંદ આવાઝ સે કહેના સહાબા કિરામ કે અમલ સે ષાબિત હૈ. તકબીરાત હર વકત, ચલતે ફિરતે, ઉઠતે-બેઠતે કહતે રહના ચાહિએ. (મરઆત શરહ મિશકાત)

ચાંદ નઝર આને કે બાદ સે લેકર ઇદ કે દીન તક બાલ વ નાખુન હરગિઝ ન કાટે યાહે કુરબાની કરે યા ના કરે. (મુસ્લિમ, અબુ દાઉદ, નિસાઇ)

ઇદૈન કી તકબીરે

તકબીરાતે ઇદૈન કઈ તરહ વારિદ હૈ. ઉન મેં સે કોઈ ભી અલ્ફાઝ ઇસ્તિમાલ કર લિએ જાએ. મખલન...

- (૧) અલ્લાહુ અકબર અલ્લાહુ અકબર, લા ઇલાહ ઇલ્લલ્લાહુ વલ્લાહુ અકબર અલ્લાહુ અકબર વલિલ્લાહિલ હમ્દ. (દારકતની)
- (૨) અલ્લાહુ અકબર અલ્લાહુ અકબર અલ્લાહુ અકબર કબીરા (મુસ્નદ અ. રઝઝાક) મૈદાને ઇદ મેં ભી કષરત ઓર ઝોર સે તકબીરાત કહની ચાહિએ. (ફતહુલ બારી વ નયનુલ અવતાર)

ઇદ કે દિન કે અઅમાલ

- (૧) સુબહ સવેરે નહા-ઘોકર હસ્બે ઇસ્તિતાઅત (પોતાની તાકત પ્રમાણે) બહેતર સે બહેતર લિબાસ પહને ઓર ખુશ્બુ લગાએ. (મિશકાત)
- (૨) ઇદુલ ઝોહા કે દિન નમાઝ સે પહેલે કુછ ન ખાએ બલ્કિ આકર કુરબાની કે ગોશત મેં સે ખાએ. (તિરમિઝી, મુસ્નદ અહેમદ)
- (૩) ઇદ કી નમાઝ સુરજ બુલંદ હોતે હી પળ્હ લેની ચાહિએ ઝયાદહ દેર ન કી જાએ. (અબુદાઉદ, ઇબ્નેમાઝા)
- (૪) ઇદ કી નમાઝ કે લીએ મૈદાન કી તરફ નિકલના ઓર રાસ્તા ભર તકબીર કહતે હુએ ચલના ચાહિએ. (મિશકાત મઅ મરઆત)

- (प) तमाम औरते बी एदगाह में जाये अलबता हायेडा औरते नमाज के वकत अलग बेह जाये. (बुजारी, मुस्लिम)
- (इ) बिला ञइरत मस्जिद में नमाजे एद पणह लेना दुरस्त नहिं.
- (उ) एद की नमाज बिला अजान व अकामत के मस्नुन है. नमाज से पहले जुत्बा देना और नमाज से पहले या बाद में सुन्नत व नवाइल पणहना अल्लाह के रसुल (स.अ.व.) से धाबित नहिं. (बुजारी, मुस्लिम)
- (ल) एद की नमाज दो रकअत सुन्नते मोअ्केदाह् हे. पहली रकअत में तकबीरे तहरीमा के बाद सात तकबीरे और दुसरी रकअत में किराअत से पहले पांच तकबीरे कहनी याहिअे. तकबीरे तहरीमा के अलावाह् एस तरह कुल तकबीरात बारह (१२) हुए. (बुजारी, मुस्लिम, तिरमिडी, अबु दाउद)
- (ए) पहली रकअत में “सुरह अअला” और दुसरी रकअत में “सुरह गाशियह” या पहली में “सुरह काइ” और दुसरी में “सुरह क्मर” पणहना सुन्नत हे. (तिरमिडी, अबु दाउद)

तकबीराते ञवाएद में रइउलयदैन

तकबीराते ञवाएद में (बंनेव रकअत नी बार वजत तकबीरो पणहती वजते) रइउलयदैन सहाबा के अमल से धाबित हे. (तलपीस अलजेर, एब्नेमाज)

अगर कोए एद की जमाअत न पाये ?

अगर कोए एद की जमाअत न पाये तो उसी जगह मैदान में मस्नुन तरीका पर दो रकअत नमाज अदा कर ले. (मरआत शरह मिश्कात)

एद की मुबारकबाद

मुसलमानो को एद की मुबारक बाद देते वकत अेक दुसरे से “तकब्बलल्लाहु मिन्ना व मिन्क” कहना याहिअे.

सबसे बहेतर कुरबानी

कुरबानी के जानवरो में सब से बहेतर जानवर दुब्बा हे. सब से अइजल कुरबानी वह हे जो तंदुरस्त व तपाना हो.

कुरबानी के जानवर

वह जानवर जुन की कुरबानी नबी (स.अ.व.) और सहाबा किराम ने की वह भेज, बकरी, उट, गाय है. यह चारो किस्म के नर और मादा जानवर कुरबानी के जानवर हे. सल्ले सालिहीन से एन्ही जानवरो की कुरबानी धाबित हे.

अेक जानवर में सात आदमी शरीक हो सकते हे. लेकिन यह तआदाए सिई गाय

और उट के साथ जास हे. बकरी और दुग्गा में शिरकत जायज नही. हां अक बकरी और अक दुग्गा पुरे घर की तरफ से हो सकता हे. जैसा कि सुनन अबुदाउद और मुस्तदरक हाकिम में अहादीष मयजूद हे. सुनन तिरमिज़ीमें उट में दस आदमीयों की शिरकत ली मऊकुर हे मगर उस की सनद बनिसबत इस हदीष के ज़स में उटमें ली सात की शिरकत का तऊकरहे हे, कमऊर हे. लिहाज़ा बहेतर हे कि उट में ली सात अइराद शामिल हो.

अक बकरी का सारे घरवालो की तरफ से काड़ी होना अहादीषे सहीहा और सहाबा के अमल से षाबित हे. इस को नबी (स.अ.प.) की ખुसुसीयत बताना या मन्सुख कहकर गुज़र जानेकी कोशिश करना धन्तहाय्य दरजे की ज़सारत हे और इस तरह की बातिल तापीलात से हदीष शरीफ़ की मुખालिफ़त लाज़िम आती हे.

क्या कुरबानी की किंमत सदका की जा सकती हे ?

कुरबानी के लीये ज़स जानपर का ऊबह करना इकने कुरबानी हे. यअनी जानपर का ખुन बहाना ज़री हे. कोय दुसरी चीज़ उस के कायम मकाम नही हो सकती. जे लोग बिरादराने पतन के साथे बजं रवादारी और अपनी गुलामाना ऊहनीयत के पेशे नऊर जानपर की कुरबानी के बजाये उस की किंमत दे देने की बात करते हे वह सरासर नादानी और हमाकत की बात करते हे. किंमत अदा करना तो दुर की बात हे ખुद किंदा जानपर को सदका कर देना ली कुरबानी के कायक मकाम नही हो सकता.

कुरबानी का जानपर कैसा हो?

कुरबानी के जानपर का धन्तिभाब किया जाये वह तंदुरस्त, तवाना और ખुबसुरत हो, अगर नर हो और सींगदार हो तो ऊयाह बहेतर हे कयुंकि नबी (स.अ.प.) ऐसे ही जानपर पसंद करते थे.

जानपर का दंता (दांत कां होना) ऊरी हे. सिई बपकते मजबुरी लेण का छे मा (छ महिना) का बरया ली कुरबानी किया जा सकता हे. (मरआत शरह मिशकात) कुरबानी का जानपर बे ऐब होना चाहिये. यअनी काना-कुबणा, अंधा-लुला या कान कटा पगेरह नही होना चाहिये. अगर ये जानपर का तमाम ओयुब से पाक होना ऊरी हे मगर जानपर परीदने और कुरबानी के लिअे मुतअय्यन करने के बाद ऐबदार हो जाये तो उस की कुरबानी हो सकती हे, परीदते पकत उस का बे ऐब होना ऊरी हे. (मुस्नद अहमद मोअत्ता धमाम मालिक)

कुरबानी का पकत

कुरबानी का पकत धद की नमाऊ के बाद हे. नमाऊे धद से पहले की गध कुरबानी, नही होती बल्कि उस की जगह दुसरी कुरबानी करना लाज़िम होगी. (बुजारी) इस में देहाती और शहरी की बात निकाल कर दोनो में तइरीक करना कतअन दुरस्त नही. ખुसुसन उन लोगो से जे बात बात में अेहितमामकी बात करते हे यह बेअेहितयाती धन्तहाय्य दरजा तअज्जुब जेऊ हे.

कुरबानी के लिखे साहिबे निसाब

बाऊ लोग कुरबानी के लिखे साहिबे निसाब ओर मुकीम की शर्त लगाते हे लेकिन यह बिला दलील हे सिई साहिबे इस्तिताअत होना काई हे. कुरबानी से छुटकारा के लिखे यह शर्त लगाना इमानी कमजोरी की दलील हे.

कुरबानी कौन से दिन तक जर्घज हे ?

सहीह हदीष व सहाबा के अमल की रोशनी में कुरबानी करना इद के दिन ओर उसके तीन दिन बाद तक जर्घज हे. यअनी तमाम अय्यामे तशरीक कुरबानी के दिन हे. (आदुलमआद, नयनुल अपतार)

क्या जरसी की कुरबानी इरस्त हे ?

बाऊ हजरात जरसी जानपर की कुरबानी से परहेज करने की तलकीन करते हे जो इरस्त नहीं हे. कयुंकि अहादीषे सहीहा से षाबित हे कि नबी (स.अ.प.) ने जरसी जानपर की कुरबानी की हे. हलाल जानपर का जरसी होना ऐब नहीं, हुस्न हे. जरसी होने को ऐब समजना अकल व शरअ व उई आम को गलत बताना हे. (अबु दाउद, इब्नेमाजा, नयनुल अपतार वगैरह)

क्या जानपर को किसी दुसरे से जबह करवा सकते हे ?

अगरये बहरजा मजबुरी जानपर को दुसरे से भी जबह करवा सकते हे मगर जानपर को जुद जबह करना जयादह अइजल हे. अगर किसी मजबुरी से जुद जबह न कर सके तो, अगर मुमकीन हो तो जुद यहां हाजिर जर रहे. (इतहुलबारी शरह बुजारी)

कुरबानी का तरीका

जबह करने से पहले छुरी वगैरह को जुब तेज कर लेना चाहिये. नेज अगर जानपर काबु में न आ सके तो उस के पांच बांध देना चाहिये. इर बांधे पहलुपर उस की गरदन पर दबाव देते हुअे “बिस्मिल्लाहि वल्लाहु अकबर” कहकर छुरी इर देना चाहिये. कोइ ऐसा तरीका इस्तिमाल न करे जस से जानपर को बिला वजह जयादह तकलीफ हो. (नयनुर अपतार, भरआत)

कुरबानी की दुआ

“इन्नी वज-जह-तु वज-हि-य लिल्लाही-इ-त-रस्समावाति वल-अर्ज हनीइफं वमा अना-मिनल मुश रि-की-न. इन्न सलाती व-नुसुकी व-मह-या-य व-ममाती लिल्लाहि रब्बल आलमीन ला-शरी-क-लहु व भिजा-लि-क उमिर-तु व अना अप्वलुल मुस-लिमीन.”

अगर कुरबानी अपने और घरवालों की तरफ से करना हो तो यं कहें “अल्लाहुम्म ल-क व मिन्क तक्विल मिन्नी वमिन अह-लि बयती.” और अगर दूसरे की तरफ से हो तो कहें, “अल्लाहुम्मा तक्विल मिन” के बाद उस का नाम ले और “बिस्मिल्लाहि वल्लाहु अकबर” कहकर ञबह करें.

कुरबानी में यमने का मसरफ़

कुरबानी के जानपरो की जाल वगैरह गुरबाअ व मसाकीन और यतीमो को देना अइजल है. कस्साब वगैरह की उजरत में यमणा या कुरबानी का गोशत देना हरगिज ज़ाई नही बल्कि कुरबानी को ञाअेअ कराना है. हां, एबागत देकर फुए इस्तिमाल कर सकता है. बेचकर उस की किंमत जाना ज़ाई नही. (मिशकात)

मैयत की तरफ से कुरबानी

मैयत की तरफ से कुरबानी बिलाशुबा ज़ाई व दुरस्त है. नबी (स.अ.व.) के कोल व इअल दोनो से इस का फबुत मवजुए है. तरददुए और शक की कोइ गुंज़ाईश नही. (मुस्लिम, अबु दाउए, तिरमिज़ी वगैरह)

अकीका और कुरबानी

बाज लोग अक जानपर में अकीका और कुरबानी दोनो करने की गलती करते हैं. यह किसी तरह दुरस्त नही है.

कुरबानी छोठने पर पइए

जे शफ्स कुरबानी की ताकत रजता हो उसके बावजूए भी उस सुन्नते इब्राहीमी व सुन्नते नबवी (स.अ.व.) को ञिंदा नही करता उस पर नबी (स.अ.व.) ने सफ्त पइए इरमाइ है.

नबी (स.अ.व.) ने इरमाया: “जे शफ्स कुरबानी की ताकत रजता हो इर भी न करे वह हमारी इदगाह के करीब भी न बटके.” (इब्ने माज)

इस हदीथ को सामने रजकर गौर इरमाइअे कि किस कडर बदनसीब है वह लोग जे शादी बियाह और पैदाईश व मोत के मोके पर, कोमी व मुल्की रस्मो पर और समाज रिवाजो पर शरीअत के जिलाइ पानी की तरह पैसा बहाते हैं.

लेकिन साल के बाद जब इदुज जुहा आती है तो कुरबानी के लिअे अक जानपर जरीदने की तौफ़िक नही होती.

अल्लाह तआला हमे सहीह समज अता करे. - आमीन...

‘सिराते मुस्तकीम’ना आ अंक अंगेना आपना अभिप्राय

मो. नं. : ९४२९० १७५५५५ पर आपवा. ज़ाकल्लाह ज़ैर.